हिंदी

कक्षा VI

©

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

2009

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।

Prepared by
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram-12, Kerala
E-mail:scertkerala@asianetindia.com

Typesetting by
SCERT Computer Lab

©
Government of Kerala
Education Department
2009

दो शब्द...

प्यारे बच्चो,

हिंदी की दुनिया में यह आपका दूसरा कदम है। अब आपने समझा होगा कि यह दुनिया रंग-रंगीली है। इसे अधिक निकट से देखने-समझने का अवसर इस किताब में है।

इसके गीत, कहानी, एकांकी आदि आपके दिल को खिला देंगे, साथ ही साथ यथार्थ की ओर आपका ध्यान आकृष्ट भी करेंगे। यही नहीं अपनी प्रकृति, अपने पास-पड़ोसियों से आपका संबंध और हार्दिक हो जाएगा। इन सबसे मिलते-जुलते हुए आप ज्ञान-विज्ञान के जगत में नए-नए कदम रखेंगे।

यही आशा है कि आप इससे बहुत फ़ायदेमंद होंगे।

शुभकामनाओं के साथ...

प्रोफसर एम.ए. खादर
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्,
केरल

पाठ्यपुस्तक रचना

कक्षा VI हिंदी

कार्यशाला के सदस्य

दामोदरन. टी
प्रीता कामत
डॉ. बालकृष्णन. पी
बिजुमोन. एम
बिजोय. पी
मनोजकुमार. पी
डॉ. मोहनन पिल्लै
राजेंद्रन. के
राजेष. के.वी
डॉ. राजेषकुमार
डॉ. रामचंद्रन. एस
विनोदकुमार. के
श्रीविद्या. एल
डॉ. षमली. एम.एम
डॉ. सण्णी. एन.एम
सिंधु. आर.एस
सुरेशन. एम

कलाकार

जयराम. पी.पी
बिमलकुमार. एस

विशेषज्ञ

डॉ. पवूर शशींद्रन
डॉ. वेलायुधन. के.के

अकादमिक समायोजक

चंद्रिका.के

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्(SCERT), केरल
तिरुवनंतपुरम

आगे के पन्नों में...

7-26 हरियाली हम सबकी

8-11 चारे की तलाश में (कहानी)

13 फ़सल गाँव (विवरण)

14 खेत हमारे होते हैं (बालगीत)

15 रिसॉर्ट... (रपट)

18-22 अतिरिक्त वाचन

23-26 परिशिष्ट

27-47 फ़र्क कहाँ है?

29-30 शरणदाता (कहानी)

33 स्कूली बच्चों के साथ छुआछूत(रपट)

36 बढ़ाएँ प्रीत(कविता)

37-43 अतिरिक्त वाचन

44-47 परिशिष्ट

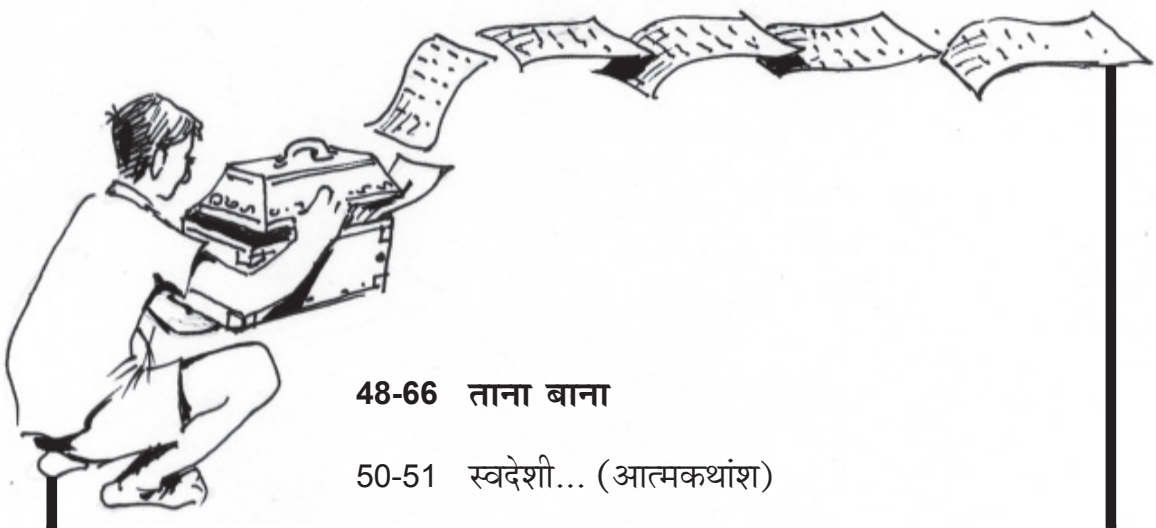

48-66 ताना बाना

50-51 स्वदेशी... (आत्मकथांश)

53-54 तुम्हारी अपनी (पत्र)

58-59 खादी के उद्योग (संपादकीय)

61-63 अतिरिक्त वाचन

64-66 परिशिष्ट

67-88 पानी का भी हक नहीं

71-73 पानी पानी रे... (कहानी)

76-77 पेयजल और विज्ञापन (लेख)

80-81 पानी का भी हक नहीं (स्किट)

83-86 अतिरिक्त वाचन

87-88 परिशिष्ट

इकाई एक

हरियाली हम सबकी

चारे की तलाश में

अण्णिक्कुट्टन का घर जंगल के पास है। वह जंगल से होकर स्कूल जाता है। जंगल के पशु-पक्षी उसके दोस्त हैं। उनकी खुशी अण्णिक्कुट्टन की भी खुशी है, उनका ग़म उसका भी। जंगल में रहती खंजन और उसकी बच्ची मुन्नी से उसका गहरा प्यार है।

एक दिन अण्णिक्कुट्टन स्कूल जा रहा था। वह मौलसिरी के नीचे पहुँचा। 'क्खीं.... क्खीं....' अण्णिक्कुट्टन ने देखा – मुन्नी रो रही है, कोयल उसके पास बैठी हुई है। 'खंजन कहाँ गई?' अण्णिक्कुट्टन ने सोचा।

क्या आप बता सकते हैं,

खंजन कहाँ गई? देखें...

■आपको सचित्र कहानी पसंद है न? तो यह पढ़ें।

खंजन चारे की तलाश में है।

वह खेत पहुँची।

उड़ते-उड़ते खंजन थक गई। उसको बहुत प्यास लगी।

कहाँ है वह तालाब?
यह मिट्टी का ढेर कैसे?

न पानी... न खेती...
न दाना... क्या करूँ?
कहाँ जाऊँ?

■सचित्र कहानी पढ़कर दोस्तों ने क्या समझ लिया? उनसे चर्चा करें।

➢खेत क्यों खाली पड़े हैं?

➢तालाब कैसे मिट्टी का ढेर बन गया होगा?

■आपकी अध्यापिका कहानी पढ़कर सुनाएँगी, सुनें।

खुद परखें, रंग भरें-

सचित्र कहानी का आशय खुद समझा।

आशय-ग्रहण में दोस्तों ने मदद की।

अध्यापिका की सहायता से आशय पहचाना।

क्या हुआ?

मुन्नी रोते-रोते सो गई। 'अभी तक मैंने भी कुछ नहीं खाया, बड़ी भूख लगती है।' –कोयल खंजन की प्रतीक्षा में है। 'हाँ, वह आ रही है। क्या उसके पास कुछ नहीं।' कोयल को आश्चर्य हुआ! खंजन पास पहुँची।

■ आप खंजन और कोयल के वार्तालाप की शुरूआत लिखें।

कोयल ने खंजन से क्या पूछा होगा? खंजन ने क्या उत्तर दिया होगा? आप लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

➢ दोस्तों के सहारे वार्तालाप को आगे बढ़ाएँ।

■ मीठे पन्ने बनाएँ, वाचन कोने में रखें।

मेहनती

उण्णिक्कुट्टन स्कूल से लौट रहा था। उसने देखा, कोयल मुन्नी को दाना खिला रही है। खुशी के मारे खंजन की आँखों से आँसू बह रहे हैं। "कोयल दीदी यह दाना आप को कहाँ से मिला?" खंजन ने पूछा।

कहाँ से मिला होगा कोयल को यह दाना? देखें।

■यह विवरण पढ़ें।

फ़सलगाँव

यह फ़सलों का गाँव है। इसीलिए लोग इसे कहते हैं, फ़सलगाँव। यहाँ के लोग मेहनती हैं। खेती-बाड़ी से उनका गहरा संबंध और प्यार है। इन लोगों के कठिन प्रयत्न से यहाँ की मिट्टी में सोना उगल रहा है।

➢दोस्तों से चर्चा करें–

■आपके यहाँ ऐसा कोई गाँव है?

■मेहनत और खेती में क्या संबंध है?

■'सोना उगल रहा है' प्रयोग से आपने क्या समझा?

ज़रा संगीत भी

फ़सलगाँव के लोग कोयल को बहुत प्यार करते हैं। हाँ, इसका एक कारण भी है। वह यह है, उनको कोयल का गाना बहुत पसंद है। वे उसे गाने के बदले दाने देते हैं।

■आप यह गीत ताल-लय के साथ गाएँ।

■अपनी एक पंक्ति इससे जोड़ें।

■दोस्तों की पंक्तियाँ भी जोड़ें।

■गीत को आगे बढ़ाएँ।

■मीठे पन्ने बनाएँ। वाचन कोने में रखें।

कोयल का गीत आप सुनना चाहते हैं?

सुनें, साथ दें...

खेत तुम्हारे होते हैं,
खेती से सब जीते हैं।
गीत मेरा सुनकर तुम
खेती-बाड़ी करते हो।

.....

.....

.....

.....

रिसॉर्ट

एक दिन स्कूल से लौटते वक्त उण्णिक्कुट्टन ने देखा– जंगल में कुछ अजनबी! "बाप रे! ये कौन हैं? ये लोग जंगल में क्या कर रहे हैं?" वह सोचने लगा।

ये अजनबी कौन होंगे?

ये लोग क्यों आए होंगे?

- आप अख़बार की यह खबर पढ़ें।
- साथियों से मिलकर चर्चा करें।
- आप जंगल काटने के पक्ष में हैं कि विपक्ष में? क्यों?
- लोगों ने अपना विरोध कैसे प्रकट किया होगा?
- आगे आप टीचर से रपट सुनें।

रिसॉर्ट के लिए जंगल काटा...!

हरापुरगाँव : गाँव की आखिरी हरीतिमा भी कुछ ही दिनों में गायब होनेवाली है। हरापुरगाँव का एकमात्र जंगल मेरुगढ़ एक विदेशी कंपनी द्वारा खरीदा गया है। कंपनी ने जंगल के पेड़ काटकर रिसोर्ट बनाने की योजना बनाई है। रिसोर्ट बनाने का काम एक हफ़्ते में शुरू होगा। कंपनी के प्रवक्ता ने कहा है कि छह महीने में रिसोर्ट बन जाएगा। जंगल को काटकर रिसोर्ट बनाने के विरोध में जनता ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

हालत क्या होगी

उस दिन बड़ी रात तक उण्णिक्कुट्टन को नींद नहीं आई। वह बेचैन था। वह उठ बैठा। पुस्तिका ली। फिर कुछ लिखने लगा।

उण्णिक्कुट्टन क्यों बेचैन है?
उसने क्या-क्या सोचा होगा?
क्या-क्या लिखा होगा?

■आप उण्णिक्कुट्टन के विचारों को लिखें।

■दोस्तों से मिलकर विचारों को आगे बढ़ाएँ।

■भूलना मत, टीचर की सहायता से इसका संशोधन ज़रूर करें।

■मीठे पन्ने बनाएँ। वाचन कोने में रखें।

आप भी डायरी लिखने की आदत रखते हैं न?

अफ़सोस

गाड़ियों की आवाज़ सुनकर उण्णिक्कुट्टन की नींद खुली। वह बाहर दौड़ आया। नानी, माँ सब बाहर खड़ी थीं। "क्या है माँ? बड़े सबेरे ये गाड़ियाँ क्यों...?" उण्णिक्कुट्टन ने सवाल किया। "बेटा हमारा जंगल जे.सी.बी से..." माँ आगे न बोल पाई। जंगल के पेड़ एक-एक होकर गिरने लगे। "बाप रे! अब क्या करूँ? कैसे रोकूँ? किससे कहूँ?"

क्या, आप उण्णिक्कुट्टन की मदद कर सकते हैं?
आगे क्या-क्या हुआ होगा?

सोचें...

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- उण्णिक्कुट्टन ने क्या उपाय सोच निकाला होगा?
- किसकी मदद लेने का निश्चय किया होगा?
- आगे क्या-क्या किया होगा?

■ सोचें, आख्यान को आगे बढ़ाएँ।

■ आप के लिए एक एकांकी पन्ना 18 में है। पढ़ें।

एकांकी

अगर कटे जंगल

सुधारानी

यह एकांकी पढ़ें

पात्र :

- सूर्य
- वर्षा
- नन्हा बीज जो बाद में पौधे में बदल जाता है।
- चार-पाँच पौधे
- एक पेड़
- प्रदूषण का राक्षस
- इंद्रधनुष

(पर्दा उठता है। सूर्य के पात्र में एक बच्चा मंच पर आता है, गुनगुनाता है)

सूर्यः

कितना सुखकर है
सबको सोने-सी ये धूप बाँटना,
सबको जीवन देती है यह धूप
मानव, पशु-पक्षी, पौधे या दूब।

(सूर्य मंच पर घूमता है। तभी कोने में नन्हा बीज सहमा दिखाई देता है)

सूर्य : अरे, नन्हे बीज। तुम वहाँ अंधेरे में क्या कर रहे हो? बाहर आओ। इस हरी-भरी धरती पर उभरो... एक पौधे का आकार लेकर।

बीज : (सहमकर) न न। मैं यहीं ठीक हूँ। बाहर न जाने कैसी हो दुनिया!

सूर्य : आओ तुम मेरे दोस्त। कितनी चमकीली है यह दुनिया!

बीज : मुझे कोई नुकसान तो न होगा ना?

सूर्य : नहीं भाई। नहीं।

बीज : (निकलने के प्रयास में) उफ़! कितनी कड़ी है ज़मीन। नहीं, मैं यहीं ठीक हूँ।

सूर्य : अच्छा रुको। मैं अपनी नटखट सहेली वर्षा को लेकर आता हूँ।

(सूर्य जाता है। वर्षा गुनगुनाकर आती है)

वर्ष : आज फिर बरस-बरसकर
प्यासी धरती को कर दूँगी नम।
आएगा फिर नए पौधों का मौसम
नन्हे बीज तुम कहाँ हो?

बीज : धीमी आवाज़ में। मैं यहाँ हूँ।

वर्षा : तो आओ ना बाहर। देखो धरती भीगकर नम हो गई है और दूसरे बीज भी अंकुरों का आकार ले चुके।

बीज : (बाहर आकर, अंगड़ाई लेकर) अरे, कितनी हरी-भरी दुनिया है, कितनी प्यारी हवा है! क्या मैं भी एक बड़ा

पौधा बन पाऊँगा।

वर्षा : हाँ! हाँ! क्यों नहीं?

(वर्षा चली जाती है। सूर्य आता है।)

बीज : धन्यवाद सूर्य।

(कुछ पलों के लिए मंच में अंधेरा छा जाता है। रोशनी होने पर वह नन्हा बीज एक पौधे की वेशभूषा में मुसकुराता है। साथ चार-पाँच बच्चे पौधे के वेश में हैं। उन सबके मुँह लटके हैं)

नन्हा पौधा : क्या बात है दोस्तो, आप खुश नहीं? क्या मेरा आना आपको पसंद नहीं आया?

बड़ा पौधा : नहीं नन्हे भाई। बात कुछ और है।

नन्हा पौधा : क्या बात है?

बड़ा पौधा : मुझे एक चिड़िया ने बताया है कि प्रदूषण-राक्षस, पासवाले हरे-भरे पौधों से भरे जंगल को खा गया है। अब हमारी बारी है, क्योंकि शहर की सड़क अब इस जंगल तक आ गई है।

नन्हा पौधा : सूर्य ने तो कहा था यह दुनिया बहुत अच्छी है, वर्षा ने भी।

(घबराकर वह वर्षा और सूर्य को आवाज़ देता

है। दोनों आते हैं।)

नन्हा पौधा : हमें उस प्रदूषण-राक्षस से बचाओ।

अन्य पौधे : हाँ! हाँ! बचाओ। तुम्हीं तो हमें इस धरती पर लाए हो।

(तभी प्रदूषण-राक्षस आता है।)

राक्षस : हा हा हा। यह क्या बचाएगा!

(सूरज मुँह छिपा लेता है। वर्षा भाग जाती है। तभी एक बड़ा पेड़ जो चुपचाप खड़ा होता है, अपनी टहनियों से पौधों को ढक लेता है। प्रदूषण-धुआँ उगलकर फैला जाता है।)

बड़ा पेड़ : नन्हे बच्चो, इस प्रदूषण से अगर पृथ्वी को कोई बचा सकता है तो वह हम ही है। वादा करो जैसे मैंने तुम्हें बचाया, तुम बड़े होकर आनेवाले पौधों को बचाओगे। हम सब मिलकर ही इस धरती को बचा पाएँगे।

सारे पौधे:(एक साथ) हाँ पेड़ दादा, हम वादा करते हैं।

(तभी सूर्य बाहर आता है)

सूर्य : पेड़ दादा और पौधो, आप कितने अच्छे हैं। काश! यह बात मनुष्य और उसके बच्चे समझ पाते! आओ हम सब मिलकर गाएँ तो मानव के बच्चे समझ पाएँ।

नन्हे-मुन्हे बच्चो, सुन सको तो सुनो
इन पौधों की बात।
अगर कटे जंगल तो
न होगी बरसात।
नहीं हुई बरसात तो
क्या होगा हाल?
न होगा अन्न, न जल
खत्म ही हो जाएगा
धरती से यह जीवन।
अब भी वक्त है हाथ में
अपने नन्हे हाथों से
सहेज लो यह जीवन।
बिखेरो बीज धरा पर
लगाओ अपने हाथों से पौधे।
हार जाएगा प्रदूषण भी
ले सकोगे साँस खुली हवा में।
नन्हे-मुन्हे बच्चो, सुन सको तो सुनो
इन पौधों की बात।
अगर कटे जंगल तो
न होगी बरसात।

(सब गाते हैं। वर्षा आती है। साथ आता है इंद्रधनुष। सब हाथों में हाथ डाल मुसकुराते हैं।)

-पर्दा गिरता है-

कैसा लगा एकांकी? इसके मंचन की तैयारियाँ करें। स्कूल की किसी सभा में पेश करें।

परिशिष्ट

अंकुर	-	മുകുളം	a sprout
अंगड़ाई	-	മൂരി നിവർക്കൽ	yawning
अंधेरे में	-	ഇരുട്ടിൽ	in darkness
अजनबी	-	अपरिचित	
आकार	-	रूप	
आखिरी	-	अंतिम	
आजकल	-	ഈയിടെ	now-a-days
आवाज़	-	ശബ്ദം	voice
इंद्रधनुष	-	മഴവില്ല്	rainbow
के नीचे	-	താഴെ	under
कोयल	-	കുയിൽ	cuckoo
खरीदना	-	വിലയ്ക്ക്വാങ്ങുക	to purchase
खुशी	-	संतोष	
खेती-बाड़ी	-	कृषि	
ग़म	-	दुख	
गहरा	-	ഗാഢമായ	deep
गायब	-	अप्रत्यक्ष	
गिरना	-	വീഴുക	to fall

गुनगुनाना	-	മൂളുക	to hum
घबराना	-	പരിഭ്രമിക്കുക	to be nervous
घूमना	-	ചുറ്റിക്കറങ്ങി നടക്കുക	to wander
चमकीली	-	തിളങ്ങുന്ന	shining
चारा	-	തീറ്റസാധനം	fodder
जंगल	-	വനം	forest
टहनी	-	शाखा	
ढकना	-	മറയ്ക്കുക	to cover
ढेर	-	കൂമ്പാരം	heap
तलाश	-	അന്വേഷണം	search
तालाब	-	കുളം	a pond
तीखी	-	രൂക്ഷമായ	sharp
थक गई	-	ക്ഷീണിച്ചു	tired
दाना	-	ധാന്യമണി	grain
दुनिया	-	संसार	world
धन्यवाद	-	शुक्रिया	thanks
धरती	-	भूमि	
धीमी	-	പതുക്കെയുള്ള	slow
धूप	-	വെയിൽ	sun light
नटखट	-	കുസൃതിയായ	naughty

नन्हा बीज	-	ചെറിയ വിത്ത്	small seed
नम	-	നനഞ്ഞ	wet
नानी	-	അമ്മയുടെ അമ്മ	mother's mother
निकलना	-	പുറത്ത് വരുക	to come out
नींद	-	ഉറക്കം	sleep
नुकसान	-	നഷ്ടം	loss
पर्दा	-	തിരശ്ശീല	curtain
पासवाले	-	समीप का	near by
पृथ्वी	-	भूमि	
पौधे	-	ചെടികൾ	plants
प्यास	-	ദാഹം	thirst
प्रतिक्रिया	-	പ്രതികരണം	response
प्रदूषण	-	മലിനീകരണം	pollution
प्रयास	-	कोशिश	effort
प्रवक्ता	-	വക്താവ്	spokesman
बड़े सबेरे	-	അതിരാവിലെ	early morning
बरसात	-	वर्षा	rain
बारी	-	ഊഴം	turn
बिखेरना	-	വിതറുക	to scatter

भीगना	-	നനയുക	to wet
मंच	-	വേദി	stage
मदद	-	सहायता	
महीना	-	മാസം	month
मेहनती	-	परिश्रमी	
मौलसिरी	-	ഇലഞ്ഞി	Mimusop's Elengi
योजना	-	पद्धति	plan
रोशनी	-	प्रकाश	
वादा	-	വാഗ്ദാനം	promise
सड़क	-	मार्ग	road
सवाल	-	प्रश्न	question
सहेजना	-	सँभालना	to take care
सहेली	-	കൂട്ടുകാരി	a friend
साँस	-	ശ്വാസം	breath
हरीतिमा	-	പച്ചപ്പ്	greenary
हार	-	पराजय	
हाल	-	दशा	condition
हालत	-	दशा	condition

इकाई - दो

फ़र्क कहाँ है?

हिफ़ाज़त

बशीर गाँव में माँ के साथ रहता है।
सबेरे वह जल्दी जाग उठा, क्योंकि आज ईद है। हितिन उसके लिए तोफ़ा लाया।
दिली दोस्त का तोफ़ा!
एक कुर्ता।
बशीर और उसकी माँ साफ़िया बहुत खुश हुए।
साफ़िया को अपना पुराना गाँव याद आया।
वहाँ की मुसीबतें, वे झगड़े... वह अपने पति की आँखें यादों में खो गईं। उसकी आँखें भर आईं।

उसकी आँखें क्यों भर गईं?
क्या हुआ होगा उसके पति को?

देखें...

कहानी

शरणदाता

अज्ञेय

रफ़ीकुद्दीन और देवींदर के बीच पुरानी दोस्ती थी। दंगे के कारण लोग एक-एक करके गाँव से भागने लगे। एक दिन देवींदर ने कहा, "यार, मैं भी यहाँ से जा रहा हूँ।" यह सुनकर रफ़ीकुद्दीन को बहुत दुःख हुआ। उसने कहा, "देवींदर, आप भी...? अगर कोई खतरे की बात हुई तो मैं संभालूँगा। तुम्हारी हिफ़ाज़त मैं करूँगा।"

किंतु यह व्यवस्था बहुत दिन नहीं चली। चौथे दिन रफ़ीकुददीन ने आकर खबर दी, "पूरे इलाके में मारपीट हो रही है। तुम्हें कहीं जाने का समय नहीं है। अपना ज़रूरी सामान जल्दी लो और मेरे साथ चलो।" दोनों रफ़ीकुददीन के घर चले। कुछ आगे चलकर देवींदर ने मुड़कर देखा। उसका कलेजा टूट गया।

■आप यह कहानी पढ़ें।

■साथियों से इसके आशय पर चर्चा करें।

कुछ दिन बाद चार-पाँच आदमी रफ़ीकुद्दीन से मिलने आए। "तुमने एक हिंदू को आसरा देने का धिक्कार किया है। जो गलती तुमने की है, वह माफ़ी के लायक नहीं।" धमकी देकर वे लोग चले गए। देवींदर और रफ़ीकुद्दीन ने भाग जाने का निश्चय किया। लेकिन...

मैंने

खुद कहानी का आस्वादन किया ☐

दोस्तों का सहारा लिया ☐

टीचर की मदद मांगी ☐

क्या हुआ होगा

कैसी लगी कहानी?
क्या हुआ होगा रफ़ीकुद्दीन और देवींदर को?
वे कहाँ गए होंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

■कल्पना के अनुसार आप कहानी को आगे बढ़ाएँ।

■साथियों ने क्या लिखा है, मिलकर पढ़ें।

■साथियों से मिलकर कहानी को संवारें।

■साथियों से इसके आशय पर चर्चा करें।

ऐसा भी...

बशीर साथियों के साथ मेला देखने निकला। उसने नया कुर्ता पहना है।

साफ़िया सोचने लगी।

बशीर को कितना अपमान सहना पड़ा था,

पुराने गाँव में।

उसके साथ खेलने तक कोई तैयार नहीं था।

स्कूल में उसे क्या-क्या नहीं सहना पड़ा!

वह भी सिर्फ़ अपनी जात के कारण।

क्या आप के यहाँ ऐसी हालत है? हमारे देश में ऐसा भेद-भाव अब कायम है?

स्कूली बच्चों के साथ छुआछूत

छतरपुर (मध्यप्रदेश): देश के कई इलाकों में आज भी छुआछूत उसी तरह ज़ारी है जिस तरह सैकड़ों साल पहले हमारे समाज में मौजूद थी।

छुआछूत की बीमारी का जीता-जागता नमूना देखने को मिला मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के कटहरा गाँव के एक सरकारी स्कूल में।

इस स्कूल में जब मिड-डे मील के समय स्कूल के बच्चे खाना खाने के लिए बैठे तो वे जातियों में बँटकर बिठाए गए।

कुल 60 बच्चों में 25 दलित बच्चों को ऊँची जाति के बच्चों से दूर बिठाकर खाना दिया गया। इन दलित बच्चों को स्कूल के रसोई घर में भी आने की इज़ाज़त नहीं है।

प्रदेश सरकार ने इस मामले की जाँच के आदेश दिए हैं।

■टीचर ने डोक्युमेंटरी दिखाई न? यह रपट भी पढ़ें।

■डोक्युमेंटरी देखी, रपट भी पढ़ी। अब पन्ना 36 ज़रा देखें, पढ़ें।

बच्चो, डोक्युमेंटरी देखी न?
रपट भी पढ़ी होगी।
अब आप के मन में क्या विचार है?
अपना-अपना मत प्रकट करें।

■डोक्युमेंटरी तथा रपट के आधार पर टिप्पणी लिखें।

■साथियों ने क्या क्या लिखा है?

■अध्यापिका की मदद से टिप्पणी का संशोधन करें।

अब मीठे-पन्ने बनाएँ। वाचन-कोने में रखें।

✓ लगाएँ

मेरी राय

■ अपना मत लिख सका

पूर्ण		आंशिक		नहीं	

■ अपना मत दोस्तों के मत से मिलता-जुलता था

पूर्ण		आंशिक		नहीं	

आओ, मिलकर गाएँ

दुपहर हुई। बशीर मेले के मैदान से वापस आया।

वह अपनी माँ के लिए एक दरी लाया था,

ताकि सर्दी में उनकी तबीयत ख़राब न हो।

यह देखकर ख़ुशी से माँ की आँखें भर आईं।

वे बशीर को दुआएँ देने लगीं;

जबकि पूरा गाँव नाच-गाकर ईद मनाने में मस्त था।

गाँववाले ईद कैसे मनाते होंगे? हम भी साथ दें।

कविता

बढ़ाएँ प्रीत

■यह गीत पढ़ें।

■साथियों से मिलकर ताल दें।

■इस गीत का दृश्यांकन करें।

■अध्यापिका आपकी मदद करेंगी।

■पन्ना 39 का एकांकी पढ़ें। साथ ही पन्ना 43 की कविता ईद भी।

आओ, मिलकर गाएँ गीत
गाएँ गीत बढ़ाएँ प्रीत।
भारत माता मेरी माता
तेरी माता सब की माता
हिंदू और मुस्लिम की माता
गहरा इसका सब से नाता।
सब से बढ़कर इसकी प्रीत
आओ मिलकर गाएँ गीत।
राम एक रहिमान एक है
जान एक जहान एक है
मेरी तेरी शान एक है
आन-बान पहचान एक है।
कौन कहता इनको अनरीत,
आओ मिलकर गाएँ गीत।
ज़मज़म जो है गंगाजल है
बपतिस्मा का भी तो जल है
जुदा-जुदा जो कहता छल है
धर्मों की छाया शीतल है।
क्यों कहता इनको विपरीत,
आओ मिलकर गाएँ गीत।

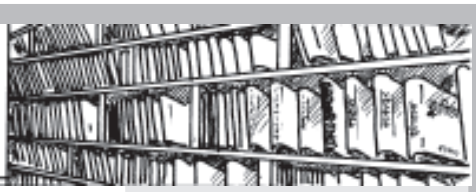

गाँधीजी ने कहा था

अस्पृश्यता का आधार...

ऐसा भी...

डोक्युमेंटरी के दृश्य, रपट की बातें भूल नहीं सकते। अब गाँधीजी के ये मत भी पढ़ें।

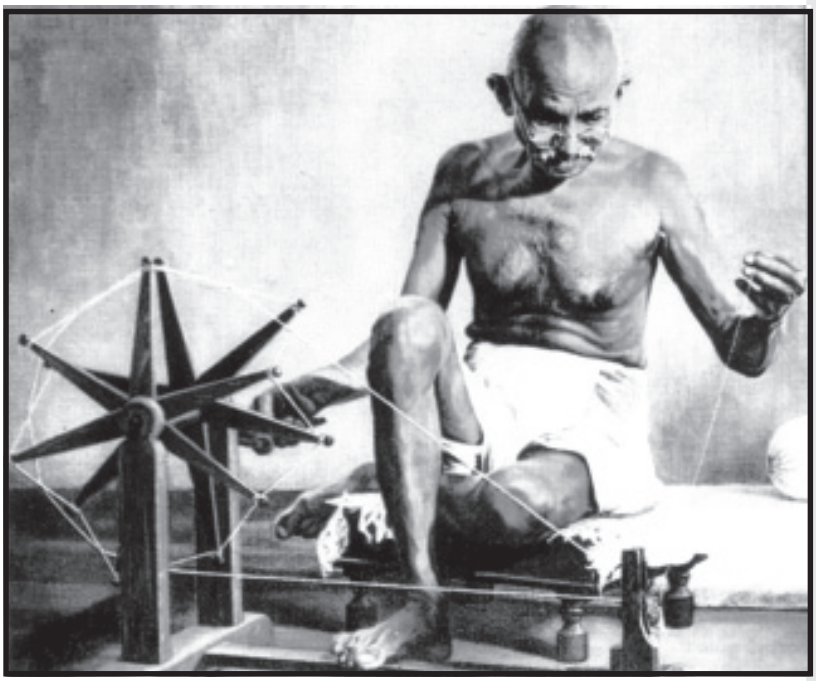

अस्पृश्यता की प्रथा का न तो बुद्धि से कोई संबंध है और न शास्त्रों में ही इसके लिए कोई प्रमाण है। शास्त्रों का जो थोड़ा-सा अध्ययन मैंने किया है और शास्त्रों का गहरा अनुशीलन करनेवालों ने मुझे जो बतलाया है उन सबसे

मालूम होता है कि अस्पृश्यता के लिए कोई आधार या प्रमाण नहीं है। अब ज़रूरी यह है कि अगर आपको विश्वास हो कि अस्पृश्यता हम पर लगी कलंक-कालिमा है, तो अस्पृश्यता को हटाने का काम हर हालत में शुरू कर दीजिए।

अस्पृश्यता को दूर करने का अर्थ सिर्फ़ इतना ही नहीं है कि जिन्हें हम अस्पृश्य मानते हैं उन्हें हम छूने लगे। किंतु इसका अर्थ इससे कहीं अधिक है। अस्पृश्यता नष्ट करने का यह अर्थ है कि ऊँच-नीच के भाव को मिटा दें।

कुछ करें

अस्पृश्यता के विरोध में केरल के कई महान व्यक्तियों ने आवाज़ उठाई है।

क्या, आप जानते हैं वे कौन-कौन हैं? उन्होंने क्या-क्या किया है? ज़रा खोज निकालें और सूचीबद्ध करें।

साथियों ने क्या लिखा है, वह भी जोड़ें।

एकांकी

फ़र्क कहाँ है?

■मिलकर गाया, मज़ा लूटा। पढ़ें, आप यह एकाँकी भी।

(सूत्रधार मंच-स्थल पर एक स्टूल पर खड़ा है, उसके हाथ में तीन टेस्ट-ट्यूब हैं, जिनमें लाल तरल पदार्थ भरा हुआ है।)

सूत्रधार : देखनेवाले मेहरबानो, ज़रा ध्यान दीजिए। आप के सामने तीन टेस्ट ट्यूब हैं और तीनों में खून है। आदमी का खून, एक में हिंदू का, दूसरे में

मुसलमान का और तीसरे में ईसाई का खून। आप लोगों में है कोई माई का लाल जो बता दें कि किस टेस्ट-ट्यूब में किसका खून है? ये लो पंडितजी। पहचान लो, हिंदू का खून बताओ। आओ मियांजी आओ, इसमें कौन-सा है मुसलमान का खून? अरे भाई जोसफ़, आओ, देखो तो कौन-सा है ईसाई का खून?

(कोई पहचान नहीं पाता।)

सूत्रधार : हा.... हा.... हा.... कैसे हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई हो तुम लोग? अपना-अपना खून नहीं पहचान सकते? पर मुझे मालूम है। और मैं तो सौ-सौ के करारे दस नोट दूँगा बतानेवाले को, चलो भाई है, कोई?

लड़की : कैसी बचपनेवाली बातें कर रहे हो जादूगर। सब खून एक है।

सूत्रधार : अरे देवी जी, आप भी क्या उड़ा रही हैं? बोलो भाइयो, क्या हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई में कोई फ़र्क नहीं है?

(भीड़ से आवाज़ें आती हैं।)

आवाज़ें : हाँ, है फ़र्क। ज़रूर है फ़र्क।

सूत्रधार : तो वह फ़र्क कहाँ है भाई? ज़रूर खून में होगा। पहचानो, बताओ। बताओ हिंदू और सिक्ख में क्या फ़र्क है?

आदमी : सरदारजी की दाढ़ी है, पगड़ी है...

(सूत्रधार ठहाका मारकर हँसता है।)

सूत्रधार : वाह भाई वाह... खूब रही। अरे दोस्त, अगर लालाजी दाढ़ी रख लें, पगड़ी बाँध लें, तो क्या सिक्ख हो जाएँगे?

आदमी 2 :नहीं हो जाएँगे।

सूत्रधार : आप का नाम क्या है, मेरे भाई?

आदमी : रामलाल।

सूत्रधार : आप का धर्म?

आदमी : हिंदू है।

सूत्रधार : क्यों?

आदमी : मेरे पिता हिंदू थे, बाबा हिंदू थे, माता हिंदू थी और मैं हिंदू हूँ।

सूत्रधार : अब बताओ भाई रामलाल कि तुम मुस्लिम परिवार में पैदा होते तो अलादीन होते। रामलाल अगर सिक्ख परिवार में होता तो तेजबीर सिंह होता, अगर ईसाई परिवार में होता तो जैकब होता। तो मेरे भाई हिंदू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई में क्या फर्क है? जहाँ हिंदू, मुसलमान एक दूसरे का खून बहाते हैं वहाँ जाकर पूछता हूँ। हिंदू, सिक्ख जहाँ एक दूसरे के गर्दन काटते हैं वहाँ जाकर वही सवाल करता हूँ। लेकिन जवाब कहीं नहीं मिलता। कहीं नहीं मिलता!

(भीड़ से एक आदमी बोलता है।)

आदमी: पर भाई तुम्हें तो फ़र्क मालूम है न?

सूत्रधार : हाँ मुझे मालूम है। पूरे देश में सिर्फ मुझे मालूम है।

आदमी: तो बताओ।

सूत्रधार : क्यों बताऊँ?

आदमी: तो तुम ने हमारा इतना टाइम क्यों खराब किया? इतनी देर से यहाँ खड़े हैं कि तुम फर्क बताओगे और अब टाल रहे हो?

सूत्रधार : सुनना ही चाहते हो तो सुनो... हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई के खून में ये फ़र्क है कि... *(ठहरकर सस्पेंस पैदा करते हुए)* बड़ी राज़ की बात है, थोड़ा धीरे से बताऊँगा ... *(लोग पास खिसक आते हैं)* ठीक तो सुनो... हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई में... कोई फ़र्क नहीं है। मेरे भाई कोई फ़र्क नहीं है।

■भूलना मत, इसका मंचन ज़रूर करें।

जो आपको मान्य है उसपर ☑ लगाएँ

मैं सभी धर्मों पर विश्वास रखूँगा। ☐

सभी धर्मों का आदर करूँगा। ☐

सामाजिक विषयों को धार्मिक विश्वासों के परे मानूँगा। ☐

ईद

आज ईद का दिन है अम्मी
आज ईद का दिन है।
नया-नया कुर्ता पहनूँगा,
नई-नई टोपी पहनूँगा।
सोनू मेरे घर आएगा
पीटर मेरे घर आएगा।
आज ईद का दिन है अम्मी
आज ईद का दिन है।
दूध-सेवंइयाँ हम खाएँगे
गले मिलेंगे तब जाएँगे।
आज ईद का दिन है अम्मी
आज ईद का दिन है।

■गाएँ, मज़ा लें...

■समान गीत लिखें, साथियों से मिलकर गाएँ।

चिह्न लगाएँ, मिलकर गाएँ

बगिया प्य र ततल प्य र
फूल-कल ह प्य र
हमको सबस प्य र ह त
भारत दश हम र

परिशिष्ट

अगर	-	എങ്കിൽ	if
अजनबी	-	അപരിചിതൻ	unknown person
अनरीत	-	മോശമായ പെരുമാറ്റം	bad behaviour
अस्पृश्य	-	അയിത്തമുള്ള	untouchable
आन-बान	-	മോടിയും പ്രതാപവും	honour and dignity
आवाज़	-	ശബ്ദം	sound, voice
आसरा देना	-	ആശ്രയം കൊടുക്കുക	to give shelter
इज़ाज़त	-	അനുവാദം	permission
इलाका	-	പ്രദേശം	area
कलेजा टूट गया	-	ഹൃദയം തകർന്നു	broken heart
कायम होना	-	നിലനിൽക്കുക	to prevail
कालिमा	-	കറുപ്പ്	blackness
खतरा	-	അപകടം	danger
खराब	-	മോശപ്പെട്ട	defective
खिसक आना	-	വഴുക്കൽ	slippery
खून	-	രക്തം	blood
गर्दन	-	കഴുത്ത്	neck
गहरा	-	ആഴമുള്ള	deep
छल	-	ചതി	cheating
छुआछूत	-	അയിത്തം	untouchability
छूना	-	സ്പർശിക്കുക	to touch

जहान	-	ലോകം	world
ज़मज़म	-	മുസ്ലിംങ്ങളുടെ പുണ്യജലം	Holy water of muslims
ज़रूर	-	തീർച്ചയായും	certainly
जाँच	-	പരിശോധന	investigation
जात	-	ജാതി	caste
जीता जागता	-	സജീവമായ	lively
जुदा	-	ഭിന്നമായ	different
ठहाका	-	പൊട്ടിച്ചിരി	laughter
तबीयत	-	ആരോഗ്യസ്ഥിതി	the state of health
तरल	-	ചഞ്ചലമായ	unsteady
ताकि	-	എന്തുകൊണ്ടെന്നാൽ	so that
तोफ़ा	-	സമ്മാനം	gift
थोड़ा	-	കുറച്ച്	little
दंगे के कारण	-	ലഹളകാരണം	because of riot
दरी	-	വിരി	bed sheet
दाढ़ी	-	താടിമീശ	beard
दुआ देना	-	ആശീർവദിക്കുക	to bless
धमकी	-	ഭീഷണി	threat

धर्म	-	മതം	religion
धिक्कार	-	വെറുപ്പ്, നിന്ദ	contempt
नमूना	-	മാതൃക, ഉദാഹരണം	example/model
पगड़ी	-	തലപ്പാവ്	turbon
फ़रक	-	വ്യത്യാസം	difference
पहचान	-	തിരിച്ചറിയൽ	identity
प्रथा	-	സമ്പ്രദായം	custom
प्रमाण	-	തെളിവ്	evidence
बचपनेवाली बात	-	ബാലിശമായ കാര്യം	childish matter
बपतिस्मा	-	ജ്ഞാനസ്നാനം	Baptism
बँटकर	-	വിഭജിച്ച്	by dividing
मनाना	-	ആഘോഷിക്കുക	to celebrate
भागने लगे	-	ഓടാൻ തുടങ്ങി	started to run
माई का लाल	-	ധീരൻ	brave man
माफ़ी के लायक	-	മാപ്പിന് യോഗ്യതയുള്ള	capable for getting pardon
मामले की जाँच	-	പ്രശ്നാന്വേഷണം	enquiry if the problem
मारपीट	-	അടിപിടി	scuffle

मुड़कर देखना	-	തിരിഞ്ഞുനോക്കുക	to look back
मौजूद	-	നിലവിലുള്ള	present
याद आया	-	ഓർമ്മിച്ചു	remembered
यादों में खो गई	-	ഓർമ്മയിൽ മുഴുകി	dipped in the past
व्यवस्था	-	വ്യവസ്ഥിതി	system
संभालूँगा	-	സംരക്ഷിക്കും	will protect
सेवंइयाँ	-	പകവാന	
हटाना	-	മാറ്റുക	to remove
हालत	-	അവസ്ഥ	condition
हिफ़ाज़त	-	രക്ഷ	protection

इकाई तीन

ताना-बाना

हमसफ़र

आज यमुना का जन्मदिन है।

उसे बधाई देने रमिषा उसके घर आई।

वह यमुना की जिगरी दोस्त है।

रमिषा को अपने घर देख यमुना बहुत खुश हुई।

वह उसे अपनी गली घुमाने ले गई।

वहाँ हथकरघे का हाल देखकर रमिषा को बहुत दुःख हुआ।

वहाँ के अधिकाँश करघे बेकाम पड़े थे।

'लोग इसका महत्व क्यों नहीं पहचानते?' –

रमिषा ने सोचा।

हथकरघे का क्या महत्व है?

देखें।

आत्मकथांश
(छात्र संस्करण)

स्वदेशी में विश्वास रखो...

मोहनदास करमचंद गाँधी

■इस चित्र से जुड़ा ऐतिहासिक प्रसंग आप याद कर सकते हैं?

मैंने यह संकल्प लिया था कि स्वदेशी वस्त्र के प्रचार के लिए कमर कस लेना है। दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर मैंने अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। आश्रम का नियम था, 'अपना कपड़ा खुद बुनो, नहीं तो बिना कपड़े के काम चलाओ।'

इससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। हिंदुस्तान के बुनकरों के जीवन की, उनकी आमदनी की, सूत प्राप्त करने में होनेवाली उनकी कठिनाई की, और आखिर किस प्रकार दिन-ब-दिन कर्जदार होते जाते थे, सब की जानकारी हमें मिली।

मैंने कुशल बुनकरों को रखकर आश्रमवासियों को कपड़ा बुनने की शिक्षा दिलाई। मैंने बुनकरों को यह चेतावनी दी कि मिल के बने सूत पर निर्भर रहकर तुम अपने धंधे का सर्वनाश कर रहे हो। स्वदेशी में विश्वास रखो क्योंकि उसके द्वारा हिंदुस्तान की भूखों-मरनेवाली अर्ध-बेकार स्त्रियों को काम दिया जा सकता है।

■हथकरघे से संबंधित एक लेख पन्ना 61 में है। चलें, वह भी पढ़ें।

फैलाएँ...

रमिषा ने सोचा – 'हथकरघे के महत्व को फैलाना है।' उसने नारा गीत बनाया –

वीर सपूत तुम भारत के हो
पहनो खादी यश बढ़ाओ
खादी की महिमा तुम गाओ
खादी का नाम रोज़ फैलाओ।

हम भी ज़रा साथ दें।

■हथकरघे के महत्व को दिखाने लायक नारा-गीत बनाएँ।

■आपके लिए गीत भी है, पन्ना 62 में। वह भी पढ़ें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

तुम्हारी अपनी

बहुत दिन हुए।

यमुना स्कूल नहीं आती।

रमिषा का दिल कचोटने लगा।

'वह क्यों स्कूल नहीं आती?

क्या हुआ होगा उसे?' उसने सोचा।

अंत में एक दिन यमुना की ख़बर मिल ही जाती है।

यमुना को क्या हुआ होगा?

ज़रा देखें।

पय्यन्नूर,
15 दिसंबर, 2009

प्रिय रमिषा,

मुझे मालूम है, तुम मुझपर बहुत चिंतित हो। कई दिनों से मैं तुम से मिलना चाहती हूँ। लेकिन यहाँ हमारी हालत बहुत बुरी है। मैं अपना दुखड़ा रोकर तुम्हें रुलाना नहीं चाहती। फिर भी तुम मेरी सबसे करीब की सहेली हो न? इसलिए कुछ छिपाती नहीं।

तुम जानती हो, हमारा परिवार खादी उद्योग का सहारा लेकर जी रहा है। आजकल खादी उद्योग विनाश के गर्त में है। हमें कोई काम मिलता ही नहीं। हमारे इलाके में हर परिवार की हालत यही है।

कभी-कभी दो वक्त की रोटी तक नसीब नहीं होती। इस हालत में मैं कैसे स्कूल आ सकती हूँ। कोई त्योहार मनाना भी हमारे वश की बात नहीं है।

खैर, तुम कब यहाँ आ रही हो? तुम से मिलने को दिल तरस रहा है।

तुम्हारी अपनी
(हस्ताक्षर)
यमुना

तसल्ली

यमुना का खत पढ़कर रमिषा को बड़ा दुःख हुआ। उसने सोचा, यमुना को मेरी साँत्वना की ज़रूरत है।

उसने कैसे लिखा होगा?

आप ज़रा लिखें।

रंग लगाएँ...

- खत का गठन ठीक है तो माला के एक मोती पर नीला रंग दें।
- आशय प्रसंगानुकूल है तो दूसरे मोती पर लगाएँ लाल रंग।
- संबोधन सही है तो तीसरे मोती पर हरा रंग दें।

एक पहल

रमिषा ने यमुना की मदद करनी चाही।

उसने सोचा, हथकरघे को बचाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

वह चिंता में पड़ गई।

दुपहर के खाने का समय हुआ। लेकिन रमिषा का न खाने का मन हुआ, न खेलने का।

वह पुस्तकालय में जा बैठी।

अख़बार पलटने लगी।

अचानक उसकी नज़र एक संपादकीय पर पड़ी।

वह बहुत खुश हुई।

संपादकीय में क्या हो सकता है?

ज़रा पढ़ें।

संपादकीय

खादी के उद्योग में नया सूर्योदय

केरल सरकार ने राज्य के कर्मचारियों को हफ़्ते में एक दिन खादी का कपड़ा पहनने का निर्देश दिया है। यह सचमुच सराहनीय कदम है। इससे हथकरघा क्षेत्र के लाखों मज़दूरों को राहत मिलेगी।

हफ़्ते में एक दिन खादी का कपड़ा पहनना कर्मचारियों के लिए मुश्किल का काम नहीं है। वैसे राज्य के स्कूलों में बच्चे वर्दी पहनकर ही आते हैं। हफ़्ते में एक दिन खादी के हथकरघे के कपड़े की वर्दी पहनने का निर्देश दिया जा सकता है। इस तरह की वर्दी पहनना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। कर्मचारी भी एक दिन खादी का कपड़ा पहनें तो खादी के लिए एक नया मार्केट ज़रूर बनेगा।

करीब दस लाख परिवार खादी-क्षेत्र से जुड़े हैं। आज उनकी स्थिति काफ़ी बुरी है। आवश्यक सहयोग और मदद के अभाव में खादी की संस्थाएँ संकट में हैं। ऐसी हालत में इस परंपरागत उद्योग को बचाने के हर प्रयास की तारीफ़ करनी चाहिए। इस प्रयास से खादी उद्योग का विकास होगा, हम ऐसी कामना करें।

■साथियों से इसके मूलभाव पर चर्चा करें।

खुद परखें...

किसी एक पर ☑ लगाएँ

मैंने खुद आशय समझा। ☐

आशय समझने में दोस्तों का सहारा लिया ☐

अध्यापिका की मदद मांगी ☐

हम भी करें...

रमिषा ने अपने दोस्तों से मिलकर चर्चा की-

'क्यों न हम भी खादी की वर्दी पहन लें?'

क्या हम भी प्रधानाध्यापिका को

ऐसा एक प्रतिवेदन दें...

हथकरघे के प्रति नौजवान आशावादी नहीं

हथकरघे के विकास के लिए सरकार बहुत कुछ कर रही है। फिर भी इसी ओर नौजवानों की रुचि कम होती जा रही है। इसके दो कारण हैं – भविष्य के प्रति आशंका और मज़दूरों की कमी।

आज की ज़िंदगी में खर्च बढ़ता जा रहा है। लेकिन इसके अनुरूप मज़दूरी नहीं बढ़ती। हथकरघे के क्षेत्र में अधिक मज़दूरी नहीं मिलती। साथ ही पवरलूमों का प्रचार भी हो रहा है। ऐसी हालत में हथकरघे के कपड़े कोई नहीं खरीदता। इसलिए लोग इस क्षेत्र से दूर होते जा रहे हैं। एक उदाहरण देखिए –

प्रकाश एक साधारण घर का सदस्य है। उसके परिवारवाले पीढ़ियों से जुलाहे का काम करते आ रहे हैं। लेकिन आजकल प्रकाश मिस्त्री का काम करता है। इसके बारे में वह कहता है, 'यह काम तो हमेशा रहता है।'

ऐसी स्थिति में सरकार युवा लोगों को हथकरघे का काम करने के लिए प्रोत्साहित करें।

■अपने गाँव के हथकरघे का विवरण दें।

■नौजवान लोग हथकरघे का काम छोड़कर मिस्त्री का काम क्यों करते हैं?

■गाएँ, मज़ा लें।

इस तरह के गीत चुनकर पढ़ें और कक्षा में मिलकर गाएँ।

बढ़े चलो

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो।

हाथ में ध्वजा रहे
बालदल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं
दल कभी रुके नहीं।

सामने पहाड़ हो
सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर हटो नहीं
तुम निडर डटो वहीं।

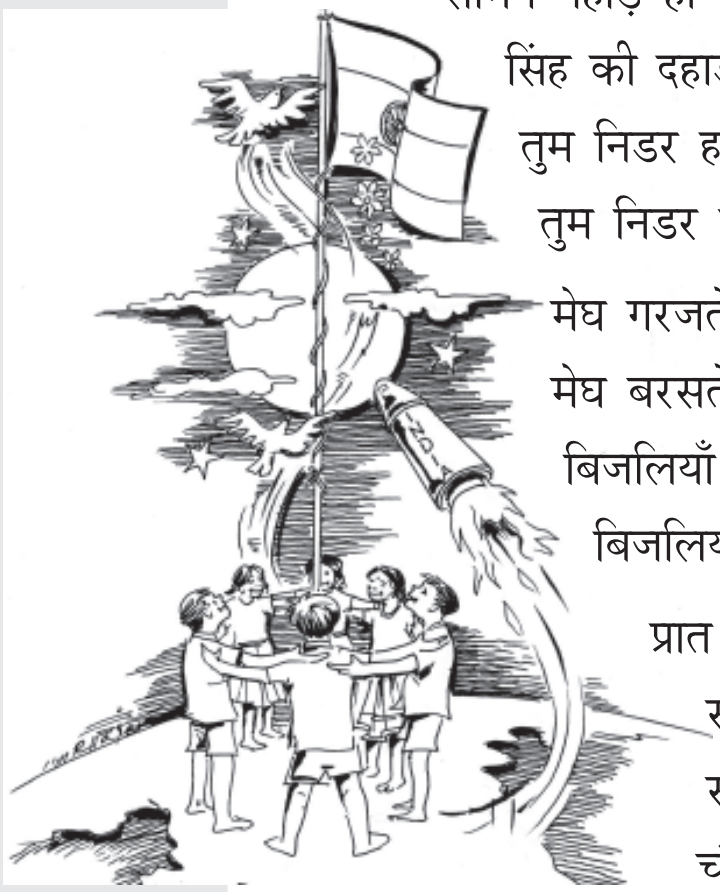

मेघ गरजते रहें
मेघ बरसते रहें
बिजलियाँ कड़क उठें
बिजलियाँ तड़क उठें।

प्रात हो कि रात हो
संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो
चंद्र से बढ़े चलो।

आईना देखें...

इनमें आप का मत कौन-सा है? ✓ लगाएँ

मैं खादी कपड़े पहनूँगा / पहनूँगी। ☐

मैं खादी का प्रचार करूँगा / करूँगी। ☐

मैं खादी कपड़े पहनूँगा / पहनूँगी और उसका प्रचार करूँगा / करूँगी। ☐

परिशिष्ट

अचानक	-	പെട്ടെന്ന്	suddenly
अर्ध बेकार	-	സ്ഥിരം തൊഴിലി	not permanantly
		ല്ലാത്തവർ	employed
आजकल	-	ഈയിടെ	now-a-days
आमदनी	-	ആദായം, വരുമാനം	earnings
आशावादी	-	ശുഭാപ്തി വിശ്വാസി	optimist
इलाके में	-	പ്രദേശത്ത്	in an area
उद्योग	-	വ്യവസായം	industry
कमर कस लेना है	-	തയ്യാറെടുക്കേണ്ടതുണ്ട്	to be ready for
करीब की सहेली	-	അടുത്ത സുഹൃത്ത്	close friend
कर्जदार	-	കടക്കാരൻ	debtor
कचोटना	-	दुखी होना	
कर्मचारी	-	ജോലിക്കാരൻ,	
		ഉദ്യോഗസ്ഥൻ	employee
कामना करें	-	ആഗ്രഹിക്കാം	may wish
खर्च	-	ചെലവ്	expenditure
खैर	-	ആകട്ടെ, ശരി	well, all right
गली	-	തെരുവ്	street
गूँथें	-	पिरोएँ, കോർത്താലും	
घुमाने ले गई	-	ചുറ്റിക്കറങ്ങുവാൻ	took for a leisurely
		കൊണ്ടുപോയി	walk

चेतावनी	-	മുന്നറിയിപ്പ്	warning
छिपाती नहीं	-	മറച്ചുവെക്കുന്നില്ല	don't to be hide
ज़िंदगी में	-	ജീവിതത്തിൽ	in life
जानकारी	-	അറിവ്	knowledge
जिगरी दोस्त	-	ഉറ്റമിത്രം	bosom friend
जुलाहे का काम	-	നെയ്ത്ത്	weaving
झुके नहीं	-	കുനിയില്ല	won't surrender
डटो वहीं	-	അവിടെത്തന്നെ ഉറച്ച് നിൽക്കൂ	stay firmly
तारीफ़	-	പ്രശംസ	praise
दहाड़	-	ഗർജ്ജനം	roar of a lion
दिल कचोटने लगा	-	दिल दुखने लगा	
दिल तरस रहा है	-	ആഗ്രഹിക്കുകയാണ്	wish
दुपहर	-	മധ്യാഹ്നം	mid-day
धंधा	-	തൊഴിൽ	occupation
नज़र	-	നോട്ടം	look
निड़र	-	ധീരനായ	courageous
निर्भर रहकर	-	ആശ്രയിച്ച്	depending
पलटने लगी	-	മറിക്കുവാൻ തുടങ്ങി	turn the pages over
पहाड़	-	പർവതം	mountain
पीढ़ियों से	-	തലമുറകളായി	for generations
प्रयास	-	പരിശ്രമം	effort

बधाई देना	-	അഭിനന്ദിക്കുക	to congratulate
बुनकर	-	നെയ്ത്തുകാരൻ	weaver
बेकाम	-	പ്രയോജനമില്ലാത്ത	useless
भूखों मरनेवाली	-	പട്ടിണി കിടക്കുന്ന	starving
मज़दूरी	-	കൂലി	labour charges
मज़दूरों की कमी	-	തൊഴിലാളി ക്ഷാമം	lack of labour
मुश्किल का काम	-	ദുഷ്കരമായ ജോലി	hard task
राहत मिलेगी	-	ആശ്വാസം കിട്ടും	to get relief
रुलाना	-	കരയിപ്പിക്കുക	to make some one cry
रोटी नसीब नहीं होती-		खाना नहीं मिलता	
वर्दी	-		uniform
शिक्षा दिलाई	-	പരിശീലിപ്പിച്ചു	trained
संकल्प	-	ദൃഢനിശ്ചയം,പ്രതിജ്ഞ	resolution
संपादकीय	-	മുഖപ്രസംഗം	editorial
सहयोग	-	സഹകരണം	co-operation
सहारा लेकर	-	ആശ്രയിച്ച്	depending
सूत	-	നൂല്	thread
स्थापना की	-	സ്ഥാപിച്ചു	established
स्वास्थ्य	-	ആരോഗ്യം	health
हटो नहीं	-	പിൻവാങ്ങില്ല	won't retreat
हथकरघा	-	കൈത്തറി	handloom

इकाई चार

पानी का भी हक नहीं

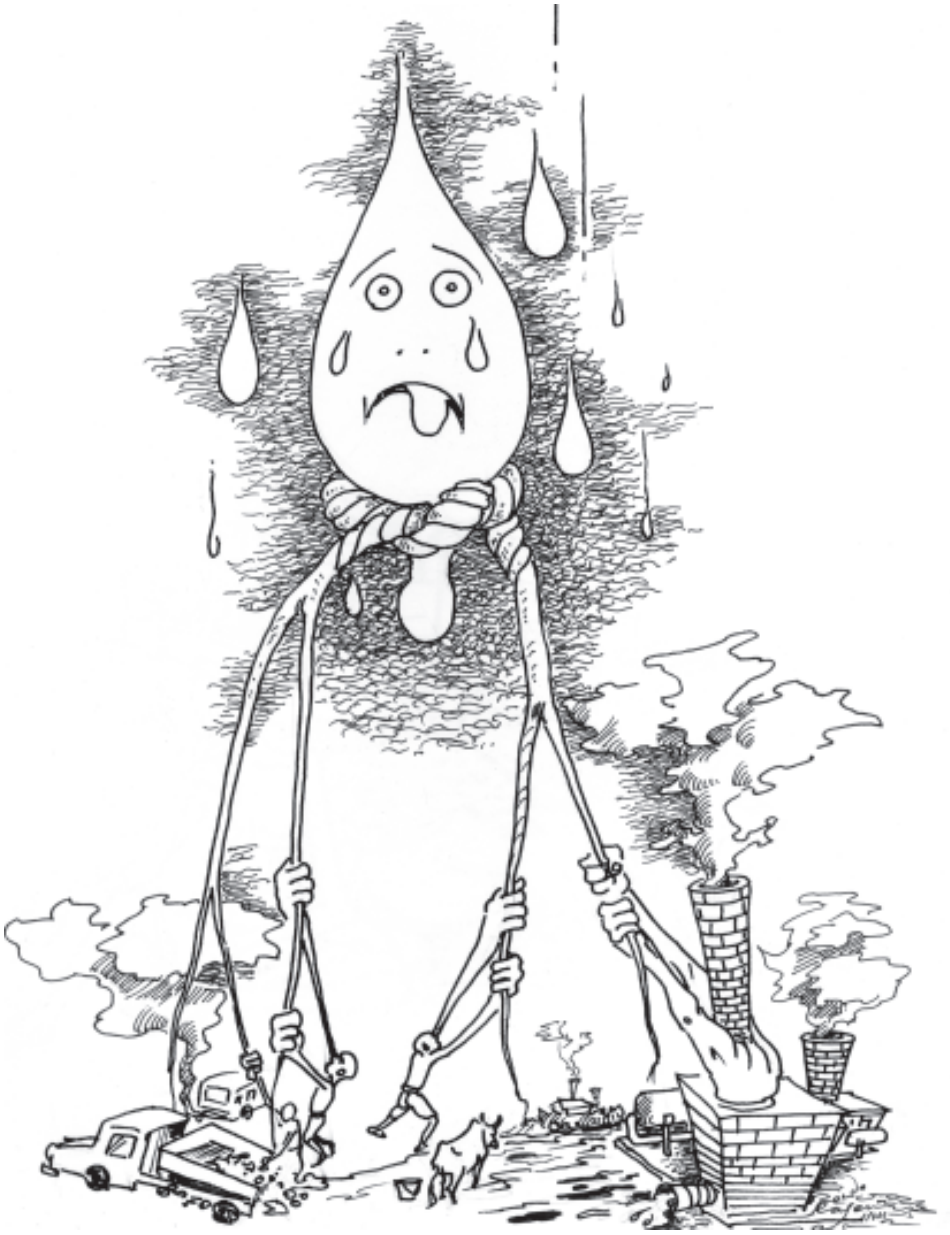

नज़ारे

प्रेमपुरा एक हराभरा गाँव।

अम्मू यहाँ की रहनेवाली है।

एक दिन वह दोस्तों के साथ मैदान में खेल रही थी।

अचानक उसने देखा, एक ट्रक।

गाँव की ओर आ रही है।

उस पर मोटे अक्षरों में लिखा था-

'रंगीन शरबत।'

यह गाँव की नयी कंपनी से आ रही है।

पिछले कई दिनों से पर्यावरण-संरक्षण-समिति कंपनी के विरुद्ध आवाज़ उठा रही है।
गाँववालों को भी जागरूक कर रही है।

उन्होंने क्या-क्या किया होगा?

हम देखें।

अध्यापिका ने फ़िल्म दिखाई न?
यह कॉलैश भी ज़रा देखें।

कॉलैश के लिए उचित शीर्षक लिखें।

कॉलैश का विशेषांक बनाएँ।
वाचन-कोने में रखें।

असर

पर्यावरण-संरक्षण-समिति के सख्त विरोध के बावजूद भी कंपनी खुल गई।

उससे गाँव का रंग ही उड़ गया।

पानी की कमी से गाँव में जीना

मुश्किल होने लगा।

गाँववाले एक-एक करके

दूसरे गाँव की ओर पलायन करने लगे।

लोग गाँव छोड़कर क्यों जाने लगे?

क्या बिना पानी के जीना आसान है?

देखें, पानी की कहानी।

कहानी

पानी पानी रे...

सरसिज कॉलोनी की दस मंज़िला इमारत सूरज की पहली किरण के साथ जाग उठती थी। लोगों को दफ्तर जाने की जल्दी, बच्चों को स्कूल जाने की हड़बड़ी, दूधवाले और अखबारवालों की आवाज़ें – एक हलचल-सी पैदा हो जातीं। ऐसी ही एक सुनहरी सुबह थी। सब कुछ सामान्य ढंग से चल रहा था। अचानक

■ऐसा कोई अनुभव है तो याद करके बताएँ।

"अरे, पानी किसने बंद कर दिया?" बन्ना अंकिल साबुन लगी आँखें मिचमिचाते हुए चिल्लाए।

"पानी कौन बंद करेगा भला?" किचन से आंटी बड़बड़ाई। तभी उनकी आशंका को सच करते हुए नीचे मंज़िल से डॉ. रहमान की आवाज़ आई – "मैडम, पंप खराब हो गया है।"

हर कोई परेशान था। बिना नहाए उपाध्यायजी की पूजा छूटी जा रही थी। वर्मा आंटी के कपड़े बिना धुले रह गए थे। मिसिस टंडन के घर में तो चाय बनाने भर का पानी नहीं था।

"अरे कॉलेनी के बाहर लगे हैंडपंप से पानी मंगवाओ" बन्ना अंकल बेचारगी से चीखे। बाहर हैंडपंप पर लोगों के साथ-साथ बाल्टियों, मटकों, पीपों और डिब्बों की कतार भी लगी हुई थी। एक-एक करके लोग पानी भरते जा रहे थे, पर लाइन थी कि खतम होने का नाम ही नहीं ले रही थी।

भीड़ पंपहाऊस की ओर बढ़

चली। लोगों की चीख-चिल्लाहट सुनकर हाथ में पेंचकस-हथौड़ी लिए हरखू मंडल बाहर आया और बोला, "आप शांत हो जाइए। मैं ने पंप ठीक कर दिया।"

थोड़ी ही देर में कॉलोनी में फिर नियमित दिनचर्या शुरू हो गई। सिंह साहब ने कार को रगड़-रगड़ कर साफ़ करना शुरू कर दिया, भंडारी अंकल ने वाश-बेसिन में नल पूरा खोल दिया और वे शैविंग करने लगे। माथुर अंकिल फ़र्श पर भर-भर बाल्टी फेंकने लगे। रुके हुए सारे काम फिर से शुरू हो गये।

उधर एक चिथड़े से अंगुलियों की कालिख पोंछते हुए हरखू सोच रहा था, "कॉलेनी का पंप खराब हो गया तो बन भी गया। अगर इस धरती का पंप खराब हो गया तो....!"

■बिना पानी के जीना क्या आसान है? क्या-क्या तकलीफ़ें होंगी?

■'धरती का पंप खराब हो गया तो...' इस चेतावनी पर अपना विचार प्रकट करें।

इन में से एक चुनें...

	हाँ	कुछ हद तक	नहीं
■ मैं ने खुद कहानी का आशय ग्रहण किया।			
■ साथियों के सहारे आशय ग्रहण किया।			
■ अध्यापिका से सहारा लेना पड़ा।			

■कल्पना के अनुसार कविता में एक पंक्ति जोड़ें।

■साथियों ने क्या लिखा है, मिलकर पढ़ें। कविता में कुछ पंक्तियाँ और जोड़ें।

■ अध्यापिका की सहायता से संशोधन करें।

■बच्चो, पन्ना 85 में एक आत्मकथांश है। चलें, वह भी पढ़ें।

जोड़ें... गाएँ...

कैसी लगी कहानी?

क्या आप के इलाके में ऐसी हालत है?

अब नीचे दी गई पंक्तियाँ पढ़ें।

अपनी पंक्तियाँ जोड़ें।

पानी हमारा जीवन है,
पानी बचाओ साथी रे,
देखो पानी दुकानों में,
कैसे बेचा जाता है।

.....

.....

.....

.....

विज्ञापन के चंगुल में...

केसरिया रंग के शरबत का विज्ञापन तो अम्मू ने देखा है, लेकिन आज तक पिया नहीं। रोज़ वह उस गाड़ी के पीछे बहुत दूर भागती थी, ताकि थोड़ा शरबत मिल जाए। उस दिन उसे गाड़ी से शरबत का एक बोतल गिरा हुआ मिला। बड़ी चाव से पूरा का पूरा बोतल उसने खाली किया। पीते ही उसे चक्कर आने लगा। फिर कुछ याद नहीं। होश आया तो वह अस्पताल में थी।

शरबत पीने से अम्मू क्यों बेहोश हो गई। देखें...

लेख

पेय जल और विज्ञापन

तपती गर्मी में शीतलता का एहसास देनेवाला ठंडा पानी खुद गर्मी झेल रहा है। इससे पहले भी पर्यावरणविद सुनिता यादव ने पेय जल में कीटनाशक होने की

बात को लेकर शिकायत की थी। लेकिन मामला कुछ दिनों तक गरम होने के बाद ठंडा पड़ गया था।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने इस मुद्दे को लेकर बहस छेड़ी है। तमाम शीतल पेय में पाए गए कीटनाशक की मात्रा से वे चिंतित हैं। उन्होंने कहा, 'विज्ञापन में मॉडलिंग करनेवाले खिलाड़ी, अभिनेता और अभिनेत्रियाँ शीतल-पेय के विज्ञापनों में मॉडलिंग करने से दूर रहे, क्योंकि इसका बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। शीतल-पेय बनानेवाली कंपनियाँ अपने माल बेचने के लिए सेलिब्रिटीज़ पर करोड़ों रुपए खर्च कर रही हैं, पर इससे इनके ग्राहकों को क्या फ़ायदा है, यह सोचने की बात है।

■आप बताएँ, आज के ज़माने में पानी का मालिक कौन है?

बनाएँ, सजाएँ...

■बोतल के पानी के विरुद्ध एक संदेश-वाक्य लिखें।

■देखें, साथियों के संदेश-वाक्य कैसे हैं?

■अब तैयार करें पोस्टर।

■पोस्टर की प्रदर्शनी चलाएँ।

■देखें, पन्ना 83 में एक कविता भी है।

बच्चो, लेख पढ़ा न? अम्मू बोतल के शरबत का खतरा समझा है न? क्या इसके विरुद्ध आवाज़ उठाना ज़रूरी नहीं है? इस विषय पर एक पोस्टर तैयार करें।

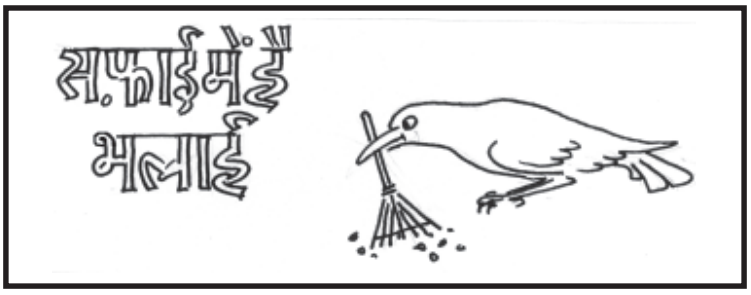

चुनें, अपने आमों को क्रम से...

■ पोस्टर में आशय है तो एक आम चुनें।	
■ यह प्रसंगानुकूल है तो एक और आम चुनें।	
■ संक्षिप्तता है तो और एक आम भी।	

कौन है मालिक

अम्मू की हालत जानकर उसके दोस्त दुखी हो गए। उन्होंने तय किया कि पूरे समाज को ऐसी कृत्रिम पेयों के विरुद्ध जागरूक कराना है। उन्होंने इस विषय पर स्कूल में एक स्किट तैयार की।

देखें...वह स्किट कैसी है।

पानी का भी हक नहीं...!

प्रेमपुरा गाँव। हरे-भरे खेतों के पास जीवन का घर। खेत से थोड़ी दूर पर नदी। नदी के किनारे पेड़ों पर चिड़ियों की बातचीत।

पिंकी : देखो हिंकी, यह नदी कितनी संपन्न थी। कितनी बार हम इस नदी से प्यास बुझाती थी। अब नदी सूखी-सी है।

हिंकी : हाँ, मुझे भी ऐसा लगा। बड़ी

समस्या है। इसको सुलझाने का कोई उपाय है?

(जीवन स्कूल से वापस आता है। चिड़ियाँ जीवन को देखकर खुशी से)

पिंकी : हिंकी, हमारा जीवन आ रहा है। हाथ में किताबें भी हैं। शायद स्कूल से आ रहा होगा।

जीवन : दोस्तो... मैं पहुँच गया। तुम्हारी बाट जोहते-जोहते कितने दिन बीत गए।

हिंकी : रे जीवन, यहाँ कितना बदल गया। खेत में तुम्हारे साथियों को भी नहीं देखा।

जीवन : अब वे खेलने यहाँ नहीं आते। हमारे मैदान में तो अब कारखाना बन गया।

पिंकी : कौन-सा कारखाना?

जीवन : कोला कंपनी का। कंपनीवाले हमारी नदी का पानी बाज़ारों में पहुँचाएँगे।

हिंकी : पीने का पानी... बाज़ार में...!

पिंकी : क्या हमें पानी का भी हक नहीं?

आगे क्या हुआ होगा?

■अब स्किट तैयार है। इसका दृश्यांकन भी करें।

कविता

पानी पानी

रघुवीर सहाय

पानी पानी
बच्चा बच्चा
हिंदुस्तानी।
माँग रहा है
पानी पानी।

जिसको पानी नहीं मिला है
वह धरती आज़ाद नहीं
उसपर हिंदुस्तानी बसते हैं
पर वह आबाद नहीं।

पानी पानी
बच्चा बच्चा
माँग रहा है
हिंदुस्तानी।

■ गीत कैसा लगा?

जो पानी के मालिक हैं
भारत पर उनका कब्जा है
जहाँ न दे पानी वहाँ सूखा
जहाँ दे वहाँ सब्जा है।
अपना पानी
माँग रहा है
हिंदुस्तानी।

धरती के अंदर का पानी
हम को बाहर लाने दो
अपनी धरती अपना पानी
अपनी रोटी खाने दो।

पानी पानी
पानी पानी
बच्चा बच्चा
माँग रहा है।

साथियों से मिलकर गाएँ।

आत्मकथा

मेरी कथा और व्यथा

■पानी का महत्व समझा है न? यह आत्मकथा पढें...

मैं पानी हूँ। मैं सर्वव्यापी हूँ। पृथ्वी के लगभग तीन-चौथाई भाग पर भिन्न-भिन्न रूपों में पाया जाता हूँ। मैं ही भाप बनकर, वायु में मिलकर बादलों के रूप में आकाश में छा जाता हूँ और कभी आकाश को, कभी भूमि को, तो कभी सागर को अपना घर बनाता हूँ।

मेरा तो केवल शुद्ध एवं स्वच्छ रूप ही आप के लिए उपयोगी है। मैं एक प्रतिशत से भी कम केवल तालाबों, झरनों, नदियों एवं भूजल के रूप में पाया जाता हूँ। मुझे तो दुःख इस बात का है कि मनुष्य ने मेरे इस रूप और महत्व को समझा ही नहीं है। मैं अपनी आत्मकथा इसलिए सुनाना चाहता हूँ कि मनुष्य मेरे इस रूप में मेरे मूल्य को पहचानें तथा मेरी शुद्धता एवं स्वच्छता को हर कीमत पर बनाए रखें।

मेरी माँग निरंतर बढ़ती जा रही है। परंतु वर्तमान में मनुष्य कभी अज्ञानवश तो कभी जानबूझकर मेरे ऊपर, कुठाराघात करते हैं। मुझे आज इतना दुःख एवं आघात पहुँचाये गये हैं कि कुछ स्वार्थी लोगों की वजह से मैं पीने का योग्य भी नहीं रह पाया हूँ।

जिन लोगों ने मेरे असली मूल्य को आँका है, उन्होंने सदैव मनुष्य को जागृत करने का प्रयास किया है, उन्हें मैं साधुवाद देता हूँ।

पानी पानी सब कहीं
पीने का तो है ही नहीं।

■ऐसी कहावतों/नारों का संकलन करें?

आप जिससे सहमत हैं, उस पर ✓डालें।

क) पानी अमूल्य है। ☐

ख) समाज में विज्ञापन का असर है। ☐

ग) जल-शोषण सामाजिक विपत्ति है। ☐

घ) आज समाज में जल शोषण नहीं है। ☐

ङ) पेय जल भी कीटनाशकों से मुक्त नहीं। ☐

च) बोतल का पानी स्वास्थ्य केलिए अच्छा है। ☐

छ) पानी भी बेचने की चीज़ है। ☐

ज) जल का संरक्षण करना चाहिए। ☐

झ) आज सब कहीं स्वच्छ पानी मिलता है। ☐

ञ) विज्ञापन का लाभ ग्राहकों को मिलता है। ☐

परिशिष्ट

असर	- സ്വാധീനം	impact
अखबार	- വർത്തമാന പത്രം	news paper
आबाद	- സമ്പന്നമായ, संपन्न	
इमारत	- കെട്ടിടം	building
एहसास	- प्रतीति, തോന്നൽ	
कब्जा करना	- अधिकार जमाना	
कुठाराघात	- വലിയ ആഘാതം	a heavy stroke
कारखाना	- വ്യവസായശാല	factory
कालिख	- काला दाग, കറുത്തപാട്	
के बावजूद	-	inspite of
खतरा	- आपत्ति	danger
खिलाड़ी	- കളിക്കാരൻ	player
खराब	- കേടായ	not working
खतम	- സമാപനം	end
ग्राहक	-	costumer
खर्च	- ചെലവ്	expenditure
चिथड़ा	- फटा पुराना कपड़ा	
चीख-चिल्लाहट	- ബഹളം	shouting
तीन-चौथाई	- മുക്കാൽ ഭാഗം,	¾
तपती गर्मी	- പൊള്ളുന്ന ചൂട്	too hot
दफ्तर	-	office
प्रतिशत	- ശതമാനം	percentage
पेचकश-हथौड़ी	- സ്പാനറും ചുറ്റികയും	spanner and hammer
पोंछना	- തുടയ്ക്കുക	to rub
फ़र्श	- തറ	floor
फ़ायदा	- നേട്ടം	benefit
बदलाव	- മാറ്റം परिवर्तन	

बाल्टी	-	വെള്ളം കോരുന്ന തൊട്ടി	bucket
बाल्टी फेंकने लगा	-		began to throw the bucket
बाट जोहते-जोहते	-	प्रतीक्षा करते करते	
भाप	-	ബാഷ്പം	steam
भीड़	-	ആൾക്കൂട്ടം	crowd
मटका	-	മൺകുടം	mud pot
मंजिल	-	നില	stair
मुद्दा	-	പ്രശ്നം, ചർച്ചാ വിഷയം	issue
आँखें मिचमिचाना	-	കണ്ണുകൾ ചിമ്മുകയും തുറക്കുകയും ചെയ്യുക	
		आँखें बंद करना और खोलना	
रगड़-रगड़कर	-	തേച്ചുരച്ച്	by rubbing
शिकायत	-	പരാതി	complaint
शायद	-	ഒരു പക്ഷെ	perhaps
सख्त विरोध	-	कठोर विरोध	
सब्जा	-	പച്ചപ്പ്	greenness
साधुवाद	-	धन्यवाद	thankful
सुनहरी	-		golden
सुलझना	-	പരിഹരിക്കുക	solve
सेलिब्रेटीज़	-	नामी लोग	famous person
स्वास्थ्य	-	ആരോഗ്യം	health
हथौड़ी	-	ചുറ്റിക	hammer
हरे-भरे	-	പച്ചപിടിച്ച	greeny
हलचल	-	ബഹളം, खलबली	

कक्षा ६